कल्पना जैन

21वीं सदी के प्रथम दो दशकों के गीतकाव्य में राजनीतिक जीवन–मूल्य

शोध सार

गीत, गीतकार के हृदय से उत्पन्न वह धारा है जो अपने काल को स्पर्श करती है, उसमें सामाजिक, राजनीतिक आदि जीवन के पक्ष की सुंदर झांकी मिलती है। अनेक हिंदी गीतकारों ने अपने गीतिकाव्यों में राजनीतिक जीवन–मूल्यों की अभिव्यक्ति की है। किसी भी समाज को जीवित रखने के लिए राजनीतिक संगठन का एक सुंदर और उचित जीवन–मूल्य वाला ढांचा होना अत्यंत आवश्यक है। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था व्याप्त है। एक सफल लोकतंत्र में राजनीतिक और सामाजिक समानता को प्राथमिकता दी जाती है परंतु कुछ स्वार्थी तत्व केवल अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए राजनीति में धर्म और जाति आदि का समावेश कर लेते है। आर्थिक विषमता को बढ़ाने के लिए भी यही राजनीतिक स्वार्थी तत्व कारक बनते हैं। राजनीति जीवन–मूल्य की गिरावट हमारे समाज और जनता के लिए हानिकारक है। एक स्वस्थ समाज ही एक स्वस्थ राजनीति को स्थापित करता है और एक उच्च जीवन–मूल्यों वाली राजनीति ही समृद्ध समाज को बनाती है।

संकेत शब्द : गीतकाव्य, जीवन–मूल्य, लोकतंत्र, राजनीति ।

प्रस्तावना

गीत, गीतकार के हृदय से उत्पन्न वह धारा है जो अपने काल को स्पर्श करती रहती है उसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक जीवन के पक्ष की सुंदर झांकी मिलती है मानव के झंझावटों से जूझते हुए संघर्ष की व्यथा भी लयबद्ध होती है और षड्यंत्रों तथा कुचक्रो को व्यक्त करने की क्षमता भी गीत रखता है। राजनीतिक जीवन की उथल–पुथल और जनता पर प्रभाव का एक गीतकार से अधिक सूक्ष्म अवलोकन शायद ही कोई कर पाए। राजनीति, राज और नीति शब्द युग्म से बना है जिसमें शासन के लिए नियम बनाना आता है। शासन में शक्ति विद्यमान है और उच्च जीवन मूल्यों के बिना शक्ति का सही प्रयोग संभव नहीं है। मानव के उत्कर्ष विधायक तत्व जीवन–मूल्य होते हैं। जीवन–मूल्य ही मानव को उच्चादर्शगामी बनाते हैं।

> **आलपोर्ट ने कहा है कि "मूल्य मानव विश्वास है जिनके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।'' [1]**

[1] एनo आरo स्वरूप सक्सेना तथा संजय कुमार (सन् 2008): 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत', पृष्ठ 1153 ।

जीवन में यदि उत्कृष्ट जीवन–मूल्यों का अभाव हो जाता है तो समाज का ढाँचा गड़बड़ाने आने लगता है। यह जीवन के आधारभूत तत्व है। आज आवश्यकता है उत्कृष्ट जीवन–मूल्यों को भावना में उतारने की, उन्हें आचरण का आधार बनाने की। इस गंभीर चुनौती के प्रति हिंदी साहित्य का साहित्यकार सजक है। अनेक हिंदी साहित्यकारों ने अपने गीतिकाव्यों में राजनीतिक जीवन–मूल्यों आदि जीवन–मूल्यों की अभिव्यक्ति की है। किसी भी समाज को जीवित रखने के लिए राजनीतिक संगठन का एक सुंदर और उचित जीवन–मूल्य वाला ढांचा होना अत्यंत आवश्यक है। राजनीति समाज का अविभाज्य अंग है। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था व्याप्त है जिसमें जनता के द्वारा जनता का शासन होता है अर्थात् जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि ही दल बनाकर जनता पर शासन करते हैं तथा जनता के उज्ज्वल भविष्य के लिए निर्णय लेते हैं। यह सब सुदृढ़ और सशक्त व्यवस्थाएँ हैं परंतु प्रतिनिधियों का सही चुनाव इसका आधार है जिसके लिए जनता का निष्पक्ष, निस्वार्थी और ईमानदार होना अत्यंत आवश्यक है। एक सफल लोकतंत्र में राजनीतिक और सामाजिक समानता को प्राथमिकता दी जाती है और प्रत्येक व्यक्ति को आजीविका के उसकी क्षमता तथा कुशलता के अनुसार समान अवसर प्रदान करके आर्थिक न्याय की व्यवस्था भी की जाती है। प्रत्येक नागरिक धार्मिक रूप से पूर्ण रुप से स्वतंत्र होता है परंतु कुछ स्वार्थी तत्व केवल अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए राजनीति में धर्म और जाति का समावेश कर लेते है। आर्थिक विषमता को बढ़ाने के लिए भी यही राजनीतिक स्वार्थी तत्व कारक बनते हैं। गीतकार समाज में व्याप्त राजनीतिक विद्रुपताओं को जब भोगता है अथवा अनुभूति करता है तो उसका संवेदनशील मन स्वयं ही चित्कार कर उठता है और गीत का सृजन होता है। ऐसे ही गीतों में समाज की राजनीतिक व्यवस्था के सच्चे दर्शन मिलते हैं।

बसंत कुमार शर्मा के गीत 'हुआ तंत्र का दुगुना वेट' में गीतकार ने लोकतंत्र की व्यवस्था प्रणाली को गीत में व्यक्त किया है। लोकतंत्र का सच्चा अर्थ तो कहीं खो गया है जो लोकतंत्र देश में व्याप्त है उसमें लोगों अर्थात् नागरिकों द्वारा शासन का अवसर ही नहीं है। लोग अपने नेता को ही नागरिकों द्वारा चयनित करा कर सत्ता में ले आते हैं और शासन की शक्ति दबंगों के हाथों में केंद्रित हो जाती है। लोगों का शोषण उनका उद्देश्य होता है और नेता का भंडार भरना नेता का परम धर्म होता है। आम आदमी त्रासद होकर केवल भटकता रहता है, जो जनता प्रतिनिधि को चुनकर नेता बनाती है, नेता उसी का शिकार कर अर्थात् उसी का शोषण कर अपना खजाना भरता है। आतंक और अराजकता को बढ़ाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं और जनता को ऊँचे–ऊँचे सपने दिखाकर उनकी प्राथमिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं करते हैं। जनता चाहे महंगाई से त्रासद हो या भूखी–नंगी हो परंतु राजअधिकारी भोग में व्यस्त रहते हैं। उनकी विलासिता में कोई कमी नहीं आती है। जनता की पुकार को व्यवस्था अनसुना करती रहती है। 'हुआ तंत्र का दुगुना वेट' गीत दृष्टव्य है :–

अर्जी लिए खड़ा है बुधिया,
दरवाजे पर खाली पेट
राजा जी कुर्सी पर बैठे,

घुमा रहे हैं पेपरवेट
कहने को तो लोकतंत्र है,
मगर लोक की जगह कहाँ
मंतर सारे पास तंत्र के,
लोक भटकता यहाँ–वहाँ
रोज दक्षिणा के बढ़ते हैं
सुरसा के मुँह जैसे रेट
राजकुँवर जी की मर्जी है,
टोपी पहनें या पगड़ी
सारी परजा बाँट रखी है,
कुछ पिछड़ी है कुछ अगड़ी
बारी–बारी से करते हैं,
मिल–जुलकर सबका आखेट
एक तरफ हट जाना प्यारे,
जब वो निकले बाजू से
आलू प्याज अगर मँहगे हो,
काम चलाना काजू से
कच्छा बंडी
तुम्हें बहुत है,
उनको आवश्यक जैकेट
गठबंधन की
गाँठ न टूटे
नवसिखियों को सिखा रहे
जिनके पास
न धरती उनको,
सपन गगन के दिखा रहे
प्रजा छुहारा
हुई सूख कर
हुआ तंत्र का दुगुना वेट [2]

[2] बसंत कुमार शर्मा (सन् 2019): 'बुधिया लेता टोह' पृष्ठ 83-84 ।

राजा अवस्थी के गीत 'पथ में बह ले' गीतकार ने गीत में शासन की व्यवस्था और उसके प्रभाव को गीत में ढाला है। संसद जैसी विशाल व्यवस्था जिसे गीतकार ने बरगद वट के समान माना है परंतु राजनीति की विद्रुपताएँ और कुचक्र गीतकार को व्यथित कर रहे हैं। संसद जैसे उच्च आदर्शो वाली व्यवस्था में भी शासकों के मन में जहर पनप रहा है। उनके अंतस मन में स्वार्थ लिप्सा घर कर गई है। भ्रष्टाचार, बेईमानी के प्रदूषण से गीतकार बरगद वट की सुरक्षा करने की कामना करता है। अराजकता, बेईमानी, आतंक की दूषित हवाएँ अब जनता के लिए असहनीय हो गई हैं परंतु जनता के पास उन्हें ऐसे वातावरण में रहकर सहने के अलावा कोई विकल्प उपस्थित नहीं है। शासन की शक्ति नैतिक चरित्रों से गिरे लोगों के हाथों में है। शासन की शक्ति के सद्पयोग से जनता के जीवन में उज्ज्वल सूर्य उदय हो सकता है। परंतु भ्रष्ट शासकों ने उस सवेरे को कैद कर जनता का भविष्य अंधकार में झोंक दिया है लेकिन गीतकार को विश्वास है कि नागरिक अपने उर्जस्वित यत्नों से, अपने वोट के अधिकार से ऐसे प्रतिनिधि चुनेंगे जो नया सवेरा लाकर सुदृढ़ सरकार स्थापित कर सकेंगे। लोकतंत्र के साठ साल पूरे होने पर भी शासक अपने मद में चूर रहते हैं और जनता पर कोई ध्यान न देकर केवल अपने स्वार्थ में लिप्त रहते हैं। शासकों के स्वार्थी तत्व अपना स्वार्थ साधने के लिए जनता को झूठे वादे कर आश्वासन देते हैं लेकिन जनता भी इन आश्वासनों से कब तक बहलेगी एक दिन सच सामने आएगा ही 'पथ में बह ले' गीत की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है :–

विषपोषक अंतस घट
संसद का बरगद वट;
ग्रसित है प्रदूषण से,
रक्षित कर कलुष कपट
बहती है असहनीय
पवन यहां पर
हिस्से में अपने हैं
सहना, सह लें.
शक्ति– सूत्र हाथ लिए
बदचलन जमात लिए;
रात बाँटते फिरते
कैद कर प्रभात लिए;
सुबह यहाँ लाने को
उर्जस्वित यत्नों से
सूर्य खोजने वाले

सदन को खलें.
सठियाने को आए
मस्ती में बौराए;
बस्ती का ध्यान नहीं
खेत बिरछ बिकवाए;
इन दल्ले चेहरों के
स्वारथ के मोहरों के
झुनझुन आश्वासन से
कब तक बहलें. [3]

राजनीतिक चिंतन में गांधीजी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित राजनीति के व्यवहारिक पक्ष पर विचार किया है तथा अत्यधिक बल भी दिया है। उन्होंने राजनीति को धर्म से जोड़कर माना जबकि वह किसी एक धर्म के पद पर कभी भी नहीं रहे। गाँवों के विकास, पंचायतों की स्थापना तथा कायिक श्रम उनके राजनीतिक मूल्यों में प्रमुख थे। वह शक्ति के केन्द्रिकरण के पक्ष में नहीं थे। पंचायतों को प्रमुखता देते हुए स्वयं जनता के न्याय में विश्वास रखते थे। पंचायतों की व्यवस्था को गीत 'अनसुलझे प्रश्नों को लेकर' में राजा अवस्थी ने व्यक्त किया है। पंचायतों की कार्य प्रणाली अपनी निश्चित व्यवस्था पर चल रही है जिसमें संवेदना और लोगों के प्रति विकास की भावना, सही निर्णय लेने की क्षमता के सूत्र पिरोना कठिन है। 'अनसुलझे प्रश्नों को लेकर' गीत की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत है:–

पंचायत में पंच बने
बैठे कुछ रट्टू तोते;
हृदय नेत्र से हीन
किस तरह मन में सूत्र पिरोते; [4]

मनोज जैन 'मधुर' के गीत 'डगर डगर पर छले गये' गीत में शासकों की नीतियों से शोषित और त्रासद जनता की वेदना प्रगट होती है। जनता के अपने प्रतिनिधि जो जनता ने चुने उन्होंने जनता के सपनों का पूरा करने का आश्वासन देकर वोट लिया अब वह वादे पूरे नहीं कर रहे जिससे जनता की आस और सपने धराशाई हो गए हैं। साथ ही अपने सपनों के पूरा होने के लालच में गलत प्रतिनिधि चुनें, वही प्रतिनिधि सत्ताधारी बनकर ऐसी नीतियाँ बना रहे हैं जो जनता का रगड़–रगड़ कर शोषण कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में जनता अपनों से ही

[3] राजा अवस्थी (सन् 2006): 'जिस जगह यह नाव है', पृष्ठ 119 ।
[4] राजा अवस्थी (सन् 2006): 'जिस जगह यह नाव है', पृष्ठ 93 ।

ठगे जाना अनुभव करती है और कदम–कदम पर छले जाने के कारण अत्यंत व्यथित है। 'डगर डगर पर छले गये' गीत की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत है :–

हम सबके सब भरमाये हैं
और ठगे हैं अपनों से
जाने कब तक महल ढहेंगे
इन आँखों के सपनों से
सख्त हथेली पर सत्ता की
रगड़–रगड़ कर मले गये
डगर डगर पर छले गये [5]

श्री ओम प्रकाश तिवारी के 'कहाँ जिंदगी वश में' गीत सांसदों के चरित्र पर गीत रचा गया है। राजनेता आपस में वैमनस्य और मतभेद का केवल प्रदर्शन करते हैं परंतु पीछे सब एक दूसरे से मिले हुए हैं। कभी एक दल का पक्ष करते हैं तो कभी दूसरे पक्ष का, परंतु संसद में मतभेद का प्रदर्शन करते हैं। यह उनका दोहरा चरित्र है। जनता के प्रश्नों, परेशानियों का हल कोई प्रस्तुत नहीं करता, केवल एक दूसरे पर दोषारोपण करते हैं। लोकतंत्र मानो एक रस्म बनकर रह गया है। लोकतंत्र में वोट और चुनाव राजनेता आपस में मिलकर अपने अनुसार व्यवस्थित कर लेते हैं और लोकतंत्र केवल रस्म बनकर रह जाता है। 'कहाँ जिंदगी वश में' गीत में गीतकार की इन पंक्तियों में यह दृष्टव्य है :–

संसद में लड़ते–भिड़ते सब
पीछे मिले हुए हैं
होंठ सभी के जनता के
प्रश्नों पर सिले हुए हैं
नारा, वोट, चुनाव आदि सब
लोकतंत्र की रस्में ! [6]

अशोक गीते के 'गूँगी सत्ता' गीत में आज की राजनीति की झाँकी मिलती है। जनता के दाने–दाने पर सत्ताधारियों की निगाहें हैं, वह उन्हें हड़पना चाहती है। जनता की तरक्की विकास की उन्हें और शासन को कोई परवाह नहीं है। जिस कारण जनता भूखी–नंगी हो गई है तथा जनता बहुत त्रासद हो गई है। जनता से किए वादे भी पूरे नहीं होने के कारण जनता में बहुत आक्रोश है फिर भी नए वादे सत्ता द्वारा करना जारी है। दबंगों द्वारा सत्ता बनाए

[5] मनोज जैन 'मधुर' (सन् 2012): 'एक बूँद हम', पृष्ठ 118 ।
[6] ओमप्रकाश तिवारी (सन् 2012): 'खिड़कियाँ खोलो', पृष्ठ 86-87 ।

रखने का कार्य शासकों द्वारा होता है परंतु जनता की परेशानियों का केवल अर्जी के रूप में ढेर ही बढ़ता जाता है। उनका संज्ञान न सत्ता लेती है न ही कोई राजनेता लेता है। 'गूँगी सत्ता' गीत प्रस्तुत है, जिसमें व्यवस्था और प्रजातंत्र की दशा का सटीक चित्रण किया गया है :–

प्रजातंत्र है,
इसका नाम
अपना दाना
उनका खाना
लोकतंत्र का
यही फसाना
भूखी नंगी
खड़ी आवाम
पहली बारिश
उखड़ी सड़कें
पुलिया टूटी,
जनता भड़के
वादे करते,
सुबहों शाम
सबकी माँगे,
करेंगे पूरी
जनता से पर
रखेंगे दूरी
गुण्डे करते
इनका काम
अर्जियों के,
ढेर है ठहरे
गूंगी सत्ता,
नेता बहरे
गूंजे जय से,
शहर व ग्राम [7]

[7] निर्मल शुक्ल (सन् 2012): 'शब्दायन', पृष्ठ 589 ।

जगदीश व्योम के 'बाजीगर बन गई व्यवस्था' गीत में शासकों के प्रति जनता में आदर और सम्मान में आई कमी को दर्शाया है और उसका कारण भी उनका शोषण करने का व्यवहार और स्वार्थलिप्सा के कारण शासकों में देशभक्ति में आई कमी है। देश को नुकसान पहुंचाने वाले राजनेताओं को नमन करने की किस नागरिक की इच्छा होगी। यहाँ स्थिति ऐसी है कि गीतकार को शासक भेड़िया और जनता भेड़ लगती हैं, जहाँ भेड़ियों को अर्थात् भक्षक को ही रक्षा में नियुक्त कर दिया गया है, ऐसे में कब तक सुरक्षित है जन और समाज। गीत 'बाजीगर बन गई व्यवस्था' की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :–

मिला भेड़ियों को
भेड़ों की
अभिरक्षा का ठेका
जिन सफेदपोशों को मैंने
देश निगलते देखा
स्वाभिमान को बेच
उन्हें
अब
कब तक नमन करूँ रे [8]

डॉ० रामबल्लभ आचार्य के गीत 'नेता जी आ गये' में नेताओं के भ्रष्ट होने तथा उस पर न्याय प्रक्रिया से बचकर निकलने तथा फिर अपना चरित्र उजला बताकर जनता में प्रसिद्धि पाने को गीत में रचा है। नेता कई प्रकार के घोटाले करते हैं और फिर उनका चरित्र उनके झूठे दिखावे के नीचे छिप जाता है और फिर वह जनता के बीच अच्छे कार्य करने का प्रदर्शन कर वाहवाही पा लेते हैं और उस प्रदर्शन में भी उनका प्रचार–प्रसार का लोभ बना ही रहता है। 'नेता जी आ गये' गीत में गीतकार की लयबद्ध राजनीति दर्शाती रचना है, वह गीत प्रस्तुत है:–

नेता जी आ गये
आज फिर अपनी शाला में
लेते नहीं डकार
शौक से जी भर खाते हैं
लोहा, लंगड़, डामर, गिट्टी
सभी पचाते हैं
हैं बेहद चालाक

[8] रणजीत पटेल (सन् 2016): 'सहयात्री समय के', पृष्ठ 565 ।

न फँसने किसी घुटाला में
कितने जँचते हैं
पोशाक पहनकर खादी की
चिंता करते नहीं
बदन पर चढ़ती वादी की
जाने कितने पाप
छिपाये फिरे दुशाला में
बांट रहे हैं जो बस्ते
उन पर है इनका फोटू
तू भी आकर लेजा
काहे दूर खड़ा छोटू
तेरी भी तस्वीर छपेगी
किसी रिसाला में [9]

आज के युग के गीतकारों को राजनीतिक विद्रुपताओं तथा भ्रष्टाचार ने अंतस से छू लिया है। उनकी संवेदनाएँ और समाज को जागृत करने की भावना बलवती हो उठी है। शचीन्द्र भटनागर के गीत 'उछाल' में जनता के शोषण और उन्हें दबाने की नीतियों के कारण जनता में उत्पन्न आक्रोश को व्यक्त किया है । साथ ही गीतकार ऐसी नीतियों के प्रति सरकार को सावधान भी करना चाहता है कि जनता में जागृति का उछाल भी आ सकता है। 'उछाल' गीत की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं:–

सारे–के–सारे पत्थर हैं
कौन गहेगा अर्ज़ी बोलो
पीड़ित जन सिर पटक–पटककर
दरवाज़ों पर चीख़ रहे हैं
ओछेपन की गहराई में
सब भीतर तक दिख रहे हैं
उधड़ी हैं सीवनें सभी की
कौन सिलेगा दर्ज़ी बोलो
नहीं दूध के धुले कहीं भी
मुंशी और मुहर्रिर दीखे
बिके हुए अधिकारी, सेवक,

[9] निर्मल शुक्ल (सन् 2012): 'शब्दायन', पृष्ठ 627 ।

और दरोगा मुख़बिर दीखे
कितने दिन तक
चल पाएगी लोगों की खुदगज़ी बोलो
प्रजातंत्र में ज्यादा दिन तक
कभी दमन की नीति न चलती
दबी गेंद अवसर पाते ही
पहले से चौगुनी उछलती
हमें देखना है,
कितने दिन होगी यह मनमरज़ी बोलो [10]

निष्कर्षत:

राजनीति जीवन–मूल्य की गिरावट हमारे समाज और जनता के लिए हानिकारक है। एक स्वस्थ समाज ही एक स्वस्थ राजनीति को स्थापित करता है और एक उच्च जीवन–मूल्यों वाली राजनीति ही समृद्ध समाज को बनाती है। यह परस्पर एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं। भ्रष्ट समाज, भ्रष्ट नागरिकों को और भ्रष्ट नागरिक, भ्रष्ट नेताओं को स्थापित करता है और यह चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। जीवन–मूल्य समाज की उन्नति और समृद्धि के लिए स्थापित किए जाते हैं। ईमानदारी, सत्यता, निष्ठा, देशप्रेम, समरसता आदि जीवन–मूल्य राजनीति में होने अत्यंत आवश्यक है। राजनीति में पूंजीवादियों का प्रभाव, भ्रष्टाचार, दोहरा चरित्र, सामाजिक असमानता, अराजकता, पिछड़ापन, अविश्वास को जन्म देते हैं। अत: राजनेताओं को समझना होगा कि जनता का विकास ही उनका मूल ध्येय है और देश प्रेम ही सबसे बड़ा धर्म है। जो जनता आज शोषित है वह शिक्षा का ज्ञान और जागृति पाकर कल उन्हें सत्ता से हटा भी सकती है। जनता को अपने सच्चे नागरिक होने का धर्म निभाना चाहिए। स्वार्थलिप्सा, धर्मवाद, जातिवाद आदि से ऊपर उठकर सही प्रत्याशी को ही अपना मत देकर सत्ता में जगह देनी चाहिए जिससे समाज का सर्वांगीण विकास हो और देश उन्नति की राह पर चल सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची : –

1. एनo आरo स्वरूप सक्सेना तथा संजय कुमार (सन् 2008): 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत', आरo लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. ओमप्रकाश तिवारी (सन् 2012): 'खिड़कियाँ खोलो', बोधि प्रकाशन, जयपुर।
3. निर्मल शुक्ल (सन् 2012): 'शब्दायन', उत्तरायण प्रकाशन, लखनऊ।

[10] शचीन्द्र भटनागर (सन् 2015): 'कुछ भी सहज नहीं', पृष्ठ 60 ।

4. बसंत कुमार शर्मा (सन् 2019): 'बुधिया लेता टोह', गुंजन प्रकाशन, मुरादाबाद।
5. मनोज जैन 'मधुर' (सन् 2012): 'एक बूँद हम', पहले पहल प्रकाशन, भोपाल।
6. रणजीत पटेल (सन् 2016): 'सहयात्री समय के', समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार।
7. राजा अवस्थी (सन् 2006): 'जिस जगह यह नाव है', अनुभव प्रकाशन, साहिबाबाद।
8. शचीन्द्र भटनागर (सन् 2015): 'कुछ भी सहज नहीं', हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर।
9. सं० पंडित रामचंद्र पाठक (सन् 1995): 'भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश', भार्गव बुक डिपो, वाराणसी।
10. सच्चिदानंद तिवारी (सन् 1951): 'आधुनिक गीतिकाव्य', किताब महल, इलाहाबाद।

शोधार्थी (हिंदी), बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश
मोबाइल: 8802868383, ईमेल: kalpanajainindia@gmail.com